RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-09
September-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i09.017

अरब आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक स्थिति

डा0 स्मृति रानी

पी0 एच0 डी0, इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

अरब आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक स्थिति में काफी उतार–चढ़ाव मौजूद था। छठी शताब्दी के अंतिम चरण में गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ भारतीय इतिहास के एक महान् युग का अंत हो गया। गुप्त साम्राज्य के पतन के बड़े दूरगामी राजनीतिक परिणाम हुए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पिछले एक हजार से अधिक वर्षों तक मगध भारत के राजनीतिक गुरूत्वाकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना हुआ था, परंतु गुप्त साम्राज्य के पतन के साथ ही मगध का वह महत्व हमेशा के लिए समाप्त हो गया और अब उत्तर भारत की राजनीतिक शक्ति का केन्द्र–बिन्दु कन्नौज बन गया था। 7वीं शताब्दी के प्रारंभ में कन्नौज के राजसिंहासन पर हर्ष के राज्यारोहण के साथ कन्नौज के महत्व में भी सर्वाधिक उत्थान हुआ, जिससे भारत के तीन शक्तियों के बीच इस पर अधिपत्य स्थापना के लिए लगभग एक शताब्दी तक आपस में संघर्ष हुआ।

किसी महान् साम्राज्य के पतन का तात्कालिक परिणाम यह होता है कि उसके पतन के बाद स्वतंत्र सत्ता के विविध केन्द्र उठ खड़े होते है और यही परिणाम गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद हुआ जिसमें संपूर्ण भारत के विभिन्न भागों में राजनीतिक सत्ता के अनेक स्वतंत्र केन्द्रों का उदय हुआ। इसके फलस्वरूप भारत में बहु–राज्यवादी व्यवस्था का जन्म हुआ। इस बहु–राज्यवादी व्यवस्था में अनेक दुर्गुण मौजूद थे, इसके बावजूद भी यह बहु–राज्यवादी व्यवस्था इस युग के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन का मूलाधार थी। राजनीतिक परिवर्तनों के साथ–साथ इस युग में व्यापक सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन भी हुए। जाति व्यवस्था अत्यधिक जटिल हो गई और समाज रूढ़िवादी हो गया। अर्थव्यवस्था के पतन के लक्षण प्रकट होने लगे और सर्वत्र समाजवाद की जड़े मजबूत होने लगी।

हर्षवर्द्धन के शासनकाल तक कुछ सीमा तक उत्तर–भारत की राजनीतिक एकता अक्षुण्ण बनी रही। परंतु हर्षवर्द्धन की मृत्यु के बाद (647ई0) उसका राजवंश और राज्य दोनों ही नष्ट हो गया और संपूर्ण भारत में राजनीतिक अराजकता की स्थिति व्याप्त हो गई। इसी पृष्ठभूमि में नवीन राजवंशो और राज्यों को उदय का अवसर प्राप्त हो गया। मुहम्मद–बिन–कासिम के आक्रमण के समय भारत में जो राज्य मौजूद थे, उनमें से अधिकांश का उदय इसी काल में हुआ था। परिणामस्वरूप राजनीतिक अस्थिरता के इस अंधकारपूर्ण युग में उल्काओं की भाँति नवीन राजनीतिक शक्तियों का उदय हो रहा था।

मुहम्मद–बिन–कासिम के नेतृत्व में 711ई0 में सिन्ध पर अरब आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक स्थिति अत्यंत ही गम्भीर एवं सोचनीय थी। भारत देश अनेक छोटे–छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। अंतिम हिन्दू सम्राट हर्षवर्द्धन (606ई0–647ई0) सम्पूर्ण उत्तर भारत में अपनी शासन सत्ता स्थापित करने में सफल रहा था। परंतु उसकी मृत्यु के पश्चात् उत्तर भारत में पुनः राजनीतिक विश्रृखलंता उत्पन्न हो गयी। उत्तर भारत में काश्मीर, नेपाल, असम, कंधार, सिन्ध, मालवा, गुजरात, उज्जैन, अजमेर, कन्नौज, महोबा, चेदि एवं बंगाल स्वतंत्र शासकों के अधीन थे। दक्षिण भारत में भी सार्वभौम सत्ता का अभाव था, वहाँ भी अनेक छोटे–छोटे स्वतंत्र राज्य थे जो होयसल, यादव, चालुक्य, राष्ट्रकुट, कदम्ब, गंग, काकतीय, पल्लव, पांड्य, चोल, चेदि राजवंशो के अधीन थे। ये राज्य साम्राज्यवादी थे और अपनी–अपनी सीमाओं का विस्तार कर रहे थे। फलतः इनमें पारस्परिक वैमनस्य और कटुता स्वाभाविक था और वे एक–दूसरे पर अपना प्रभाव एवं प्रभुत्व कायम करने के लिए हमेशा संघर्षरत रहते थे। राजनीतिक एकता के अभाव में वे किसी विदेशी आक्रमणकारी का सामना करने में पूर्णतः असमर्थ थे। भौगोलिक आधार पर तात्कालीन भारत की राजनीतिक शक्तियों को चार भागों में बाँटा जा सकता है– (क) हिमालय प्रदेश के राज्य (ख) सिन्ध तथा गंगा के मैदान के राज्य (ग) दक्षिण भारत के राज्य एवं (घ) सुदूर दक्षिण के राज्य।

(क) हिमालय प्रदेश के राज्य – उत्तर हिमालय के अंचल में अफगानिस्तान, कश्मीर, नेपाल, सिन्ध एवं असम के राज्य थे। इनमें प्रत्येक का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :–

अफगानिस्तान – यह काबूल की घाटी में स्थित था। मौर्य शासन के पूर्व यहाँ यवनों का आधिपत्य था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने सेल्यूक्स को 905ई0पू0 में पराजित कर इसे भारत में मिला लिया। सीमान्त प्रदेश होने के कारण यहाँ आये दिन राजनीतिक उथल–पुथल होते रहते थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग के लेखों से पता चला है कि हर्षवर्द्धन के समय अफगानिस्थन में एक क्षत्रिय राजा शासन करता था। इस वंश के शासक 9वीं शताब्दी तक शासन करते रहे। तत्पश्चात् लल्लिय नामक एक ब्राह्मण ने यहाँ ब्राह्मण वंश की स्थापना की। मुसलमान इतिहासकारों ने इस वंश का उल्लेख किया है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अरब वाले इसे हिन्दूशाही कहा करते थे, ये या तो बौद्ध थे अथवा हिन्दू, क्योंकि उन्हें कुषाणों का संतान बताया जाता है।

कश्मीर प्रकृति का उद्यान या धरती का स्वर्ग कश्मीर मौर्य साम्राज्य के अंतर्गत था। कनिष्ठ और मिहिरकुल ने भी इस सुरम्य प्रदेश पर अपना अधिकार बनाए रखा। हर्षवर्द्धन के समय यह एक स्वतंत्र राज्य हो गया। 7वीं शताब्दी में कारकोटा वंश के दुर्लभवर्द्धन ने यहाँ एक शक्तिशाली हिन्दू राज्य की स्थापना की। उसी के समय ह्वेनसांग कश्मीर आया था। ललितादित्य (725ई0–752ई0) के समय कश्मीर एक शक्तिशाली राज्य बन गया। ललितादित्य बड़ा महत्वकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। उसने कन्नौज के राजा यशोवर्मन को पराजित कर कश्मीर में मिला लिया। उसका राज्य विस्तार मगध तथा बंगाल तक विस्तृत था। गुराजत और मालवा भी उसकी अधीनता स्वीकार करते थे।उसने तिब्बत और तुर्कों से भी संघर्ष किया तथा चीन से मैत्रीपूण संबंध रखा। उसने मार्तण्ड नाम स्थान पर एक सूर्य मंदिर का निर्माण कराया। किन्तु अन्य राजाओं की तरह ललितादित्य भी अपने साम्राज्य की नींव मजबूत करने में असफल रहा। कारकोटा वंश के बाद कश्मीर में उत्पल वंश का शासन आरंभ हुआ। इस वंश के दो प्रमुख शासक अवन्तिवर्मन (855ई0–883ई0) और शंकरवर्मन (883ई0–902ई0) थे। शंकरवर्मन बड़ा युद्धप्रिय शासक था उसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया, किन्तु कालान्तर में वह एक दुष्ट शासक हो गया और प्रजापीड़क बन गया। उसके निधन के पश्चात् कश्मीर के राजसिंहासन पर अनेकों राजवंश आये और गये। अंत में 1399 ई0 में कश्मीर मुसलमानों के हाथ में चला गया।

राजतंत्र का युग था, जिसका प्रधान राजा होता था। राजा का पद वंशानुगत था। प्रायः वह अपने जीवनकाल में ही अपने उत्तराधिकारी को चुन लेता था। जो सर्वसाधारण के लिए मान्य था। प्रायः उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र ही होता था। अराजकता की स्थिति में मंत्रियों अथवा जनता के प्रतिष्ठित लोगों द्वारा राजा को चुन लिया जाता था। उदाहरणस्वरूपा राज्यश्री के पति के निधन के पश्चात् कन्नौज के मंत्रियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने हर्षवर्द्धन को राजा चुन लिया। इसी प्रकार असम के राजा भास्करवर्मन ने जब बंगाल पर आक्रमण किया तो वहाँ अराजकता छा गई, जिसके निवारण हेतु बंगाल की जनता ने गोपाल को अपना राजा चुन लिया। प्रायः राजा निरंकुश ही होता था। उसकी आज्ञा या इच्छा ही कानून होता था। किन्तु परम्परागत राजधर्म के अनुसार प्रजाहित के विरूद्ध राजा कोई कार्य नहीं कर सकता था। प्रजा को अप्रसन्न करना राजा के हित के लिए खतरनाक होता था। अतएव राजा प्रजा हितैषी बनने की कोशिश करता था।

इस काल में राजतंत्र के अतिरिक्त प्रजातंत्र शासन के उदाहरण भी उपलब्ध थे। दक्षिण भारत में पल्लव वंश के शासक नन्दिवर्मन को प्रजा ने निर्वाचित कर राजा बनाया था। इस प्रकार बंगाल में पालवंश के संस्थापक गोपाल को प्रजा ने ही निर्वाचित किया था। कन्नौज का प्रसिद्ध शासक हर्षवर्द्धन भी प्रमुख लोगों की समिति द्वारा राजा चुना गया था।

राजा की शासन में सहायता और सलाह देने के लिए मंत्रीमंडल की व्यवस्था थी। मंत्रियों के परामर्श को मानना राजा की इच्छा पर निर्भर था। वह प्रायः अपनी इच्छानुसार ही सब काम करता था। प्रायः मंत्रियों के पद पैतृक हुआ करते थे। मंत्रिमंडल में मंत्रियों की संख्या निश्चित नहीं थी। अनेक प्रकार के मंत्री होते थे, यथा– अमात्य (वित्तमंत्री), सुमन्त (परराष्ट्र मंत्री), महासंधिविग्रह (युद्ध एवं शान्ति का मंत्री), महासेनापति, अक्षपट–लेखाधिकृत (राज्य के लेखामंत्री) आदि। धर्म की रक्षा के लिए राजपुरोहित होते थे, जो मंत्रियों के समान ही होते थे। सेना की देखरेख के लिए महाबलाधिकृत और महादण्डनायक दो अधिकारी होते थे। न्याय–कार्य राजा द्वारा ही सम्पन्न होता था। न्याय का अंतिम स्त्रोत वही था और राज्य के नियमों के आधार स्मृतियां एवं प्राचीन शास्त्र आदि थे।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. हरिशचन्द्र वर्मा : मध्यकालीन भारत, 1997
2. कुमार एवं कुमार : प्राचीन भारत का इतिहास, 1990
3. बृज मोहन प्रसाद : मुस्लिम आक्रमण के पूर्व भारत, 1998
4. कौलेश्वर राय : प्राचीन भारत, 1980
5. डॉ0 आर0 के0 रावत : प्राचीन भारतीय इतिहास, एक परिदृश्य, 1988
6. प्रवीण कुमार सिंह : प्राचीन और मध्यकालीन भारत का इतिहास, 2000
7. अवध बिहारी पाण्डेय : पूर्व मध्यकालीन भारत

RRIJM 2015, All Rights Reserved